ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 8 कुल पृष्ठ-8 21 से 27 सितम्बर, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 आ शु.-01

आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ताओं की बैठक में अमेरिका से लौटे आर्य प्रतिनिधिमण्डल का किया गया भव्य अभिनन्दन

पारखण्ड के खिलाफ आर्य समाज चलायेगा राष्ट्रव्यापी अभियान

– स्वामी आर्यवेश

10 दिसम्बर, 2017 को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द में पहुँचकर संगठन शक्ति का परिचय दें

– स्वामी रामवेश

'मिशन आर्यावर्त एप्प' का विधिवत किया गया शुभारम्भ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में न्यूयार्क शहर में आयोजित 27वें आर्य महासम्मेलन में भाग लेकर भारत वापिस लौटे आर्य प्रतिनिधि मण्डल का 17 सितम्बर, 2017 को 'स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ' टिटौली, जिला रोहतक में भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के सक्रिय एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं की महत्त्वपूर्ण बैठक आहूत की गई थी। कार्यकर्ताओं ने स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह जी, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या का भी ओ३म् पट्ट तथा स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। इस अवसर पर गोवा में हरियाणा की ओर से शिक्षक हरपाल आर्य कोषाध्यक्ष आर्य युवक परिषद् हरियाणा को सम्मानित किये जाने पर बधाई दी गई तथा उनका आर्य समाज की ओर से अभिनन्दन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा तथा नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने की तथा संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने किया।

सम्मान की प्रक्रिया पूर्ण होने के पश्चात् भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने के लिए महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये जिन पर विचार–विमर्श के पश्चात् निर्णय किया गया कि यौन शोषण के आरोप में 20 साल की सज़ा काट रहे गुरमीत उर्फ राम–रहीम के काले कारनामों से जनता अत्यधिक आक्रोश में है और धर्म के नाम पर चलने वाले समस्त डेरों को सन्देह की दृष्टि से देख रही है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को गाँव–गाँव और नगर–नगर में जाकर जनता के समक्ष पाखण्डियों के ढोल की पोल खोलनी चाहिए। परिषद् के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने कहा कि प्रदेश में आर्य समाज पहले से ही पाखण्ड के खिलाफ कार्य कर रहा है और अब यह कार्यक्रम और तेज किया जायेगा। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि आगामी 10 दिसम्बर, 2017 को स्वामी श्रद्धानन्द तथा पं. रामप्रसाद बिस्मिल के बलिदान की स्मृति में आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में मुख्य मुद्दा पाखण्ड का खण्डन हो और उसमें पूरे हरियाणा भर से हजारों की संख्या में लोग इकट्ठे किये जायें। इस प्रस्ताव को

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

अध्यात्म का अर्थ

- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

'अध्यात्म' शब्द आज इसलिए चर्चा का विषय बना हुआ है; क्योंकि भौतिकता के पूर्ण ताण्डव नृत्य से सभी व्यथित एवं चिन्तित हैं। राजनीति या अन्य कारणों से वर्तमान स्थिति का समाधान न प्राप्त करते हुए सभी का मन, मस्तिष्क, अध्यात्म से अपने उद्धार की कामना या कल्पना करते हुए उसी ओर आशा लगाए हुए देख रहा है। ऐसी स्थिति में जब एकमात्र साधन अध्यात्म ही हो, तो अध्यात्म और आध्यात्मिकता के विषय का सम्यक् निरूपण एवं उसके अर्थ का निर्णय होना ही चाहिए।

सामान्य रूप से अध्यात्म एवं आध्यात्मिकता का अर्थ प्रायः लोग यही समझते या जानते हैं कि वाह्य आडम्बर से रहित कुछ सामान्य साधनों से जीवन यापन करना या धार्मिक कहे जाने वाले कर्मकाण्डों का अनुष्ठान करना अध्यात्म है। जबकि वास्तव में अध्यात्म शब्द से इन अर्थों का स्फुरण नहीं होता। अध्यात्म शब्द का व्याकरणनिष्पन्न अर्थ तो यह है कि 'अधि आत्मनि' अर्थात् आत्मा को आश्रित, आधार या केन्द्र बनाकर जो कार्य या जीवनचर्या है, वही अध्यात्मपदवाच्य है। जैसा कि यजुर्वेद के 40वें अध्याय में कहा गया है-

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति।।
यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः।। यजु. 40/6-7

मन्त्रार्थ का भाव यह है कि जहाँ केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भूत आत्मस्वरूप दृष्टिगोचर होता है और आत्मा सम्पूर्ण भूतों में तद्रूप अर्थात् आत्मरूप दिखाई देता है। साधना के द्वारा जब ऐसी स्थिति उपलब्ध हो जाती है, तो ऐसी स्थिति को प्राप्त हुआ व्यक्ति किसी से घृणा नहीं करता तथा मोह-शोक के वशीभूत होकर न किसी को पीड़ित करता है, न दूसरे के द्वारा वह पीड़ित होता है। क्योंकि जब सारा चराचर उसे आत्मस्वरूप ही दृष्टिगोचर होता है, तो वह भला किस कारण से दूसरों से घृणा अथवा शोक-मोह करेगा। ऐसी स्थिति को प्राप्त व्यक्ति चाहे राजनीतिक, सामाजिक या व्यावसायिक क्षेत्र में हो, उसके द्वारा पर को मानकर किया जाने वाला आचार कैसे प्रस्फुटित हो सकता है?क्योंकि उसमें तो सम्पूर्ण चराचर आत्मस्वरूप हो रहा है। पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण एवं महामति चाणक्य इसके जीवन्त उदाहरण हैं; क्योंकि उन्होंने जो अपनी जीवन पद्धति चलाई, उनके समक्ष परपीडन का भाव नहीं, अपितु पररक्षण का भाव था। पररक्षण अर्थात् आत्मरक्षण। यदि कोई राष्ट्र या राजा अपने स्वार्थ में मदान्ध होकर उसकी दृष्टि से दूसरे देश, समाज या धर्म के ऊपर आक्रमण कर उनको पीड़ित तथा अपने अधिकार में करके अपने अहंकार की तृप्ति कर रहा है, तो उसको अन्धकार के समान नष्ट कर समाज या राष्ट्र को सुखद व्यवस्थारूपी प्रकाश में लाना तथा उसके परित्राण का उपाय करना ही मनुष्य की आध्यात्मिकता है। जैसे कोई व्यक्ति अपने लिए चाहता है, वैसे ही औरों के लिए भी सभी परिवेशों एवं साधनों को उपलब्ध कराना यदि आवश्यक समझता है एवं सद्व्यवहार आचरण को करता है, तब वह व्यक्ति आध्यात्मिक व अध्यात्मयुक्त है।

प्रत्येक सुव्यवस्था के समाज में दुर्बलतावश प्रायः दो रूप बन ही जाते हैं। एक तो उसका सुसंस्कृत अवदात स्वरूप तथा दूसरा कुछ स्वार्थी तत्वों के द्वारा वाह्य अनुकरण करके उस व्यवस्था के आन्तरिक मूल को विकृत कर अपने वाह्य आचार से उस सुव्यवस्था का केवल आचरण मात्र धारण करना। आज इस नाटकीय व्यवहार का अति प्रचार-प्रसार होने लगा है या यों कहें कि अध्यात्म वर्णसंकरता से आप्लावित हो चुका है। प्रायः यह सुनने में आता है कि अब अध्यात्म के द्वारा ही समाज तथा राष्ट्र का कल्याण होगा। अन्ततः वे अध्यात्म का क्या सन्देश ग्रहण कर रहे हैं और वही वे अन्यों को भी बताना चाहते हैं। यथार्थ तो यंह है कि कोई भी समस्या हो, उसके निराकरण के लिए उस प्रकार के तात्कालिक उपयुक्त साधनों के द्वारा ही उसका निराकरण किया जाता है। उदाहरणार्थ, किसी नाली या नहर का बंध टूट गया हो, तो उसका वास्तविक निदान तो यह है कि विशेषज्ञों द्वारा उचित उपायों से उस बंध को पुनः सुदृढ़ कर अपने अभीष्ट स्थान की ओर जल को ले जाएं। जबकि ऐसा न करके या इस कार्य में आलस्य करके किसी धार्मिक कृत्य का अनुष्ठान करना कितना उस कार्य को सफल बनायेगा या कितना उपहास्यास्पद होगा?पानी रोकने का कार्य पानी रोकने की व्यवस्थित विधि से होना चाहिए, न कि धर्मग्रन्थ के पाठ एवं स्थूल पूजा, वन्दना से।

यदि कोई राष्ट्र या राजा अपने स्वार्थ में मदान्ध होकर उसकी दृष्टि से दूसरे देश, समाज या धर्म के ऊपर आक्रमण कर उनको पीड़ित तथा अपने अधिकार में करके अपने अहंकार की तृप्ति कर रहा है, तो उसको अन्धकार के समान नष्ट कर समाज या राष्ट्र को सुखद व्यवस्थारूपी प्रकाश में लाना तथा उसके परित्राण का उपाय करना ही मनुष्य की आध्यात्मिकता है। जैसे कोई व्यक्ति अपने लिए चाहता है, वैसे ही औरों के लिए भी सभी परिवेशों एवं साधनों को उपलब्ध कराना यदि आवश्यक समझता है एवं सद्व्यवहार आचरण को करता है, तब वह व्यक्ति आध्यात्मिक व अध्यात्मयुक्त है।

इसी प्रकार कोई रोगी है तो उसकी चिकित्सा उचित औषधि से करनी पड़ती है। धार्मिक अनुष्ठान तो कर्त्ता के अन्दर सात्विक एवं आत्मिक बल प्रदान करने के लिए ही होते हैं। इसी प्रकार यदि कोई आसुरी प्रवृत्ति का राजा दूसरे देश, समाज या व्यवस्था पर आक्रमण करता है, तो उसका एकमात्र उपाय पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण एवं आचार्य चाणक्य के समान अपनी सैन्यशक्ति के द्वारा उसका मुँहतोड़ उत्तर देना ही है, न कि विकृत बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा आततायियों को अहिंसा का उपदेश देना तथा उनसे दया की भिक्षा माँगना।

सामान्य जीवन के व्यवहार में भी इसे इस प्रकार से समझ सकते हैं कि यदि हमें गन्ने या नींबू से रस निकालना है, तो गन्ने या नींबू की आरती गाने से रस प्राप्त नहीं होगा। परम्परा से उसके रस निकालने की पद्धति के अनुसार उस पर यदि दबाव दिया जाए तो बिना आरती एवं धूपबत्ती के भी वह रस प्रदान करेगा। धूपबत्ती या आरती उनके प्रति कृतज्ञता को प्रकट करने में सहायक तो हो सकते हैं; किन्तु रस निकालने में अकृतकार्य या असहाय हैं। जिन लोगों ने वर्गविशेष को सन्तुष्ट करने हेतु उनके लिए विविध प्रकार की सुविधाओं को आरक्षित करना तथा अन्य व्यक्तियों के प्रति उपेक्षा का भाव दर्शाने को अध्यात्म माना है, उनका यह चिन्तन सर्वथा वञ्चनापूर्ण एवं मूर्खतापूर्ण है; क्योंकि उसमें वर्ग विशेष को सन्तुष्ट करना और अन्यों को उससे वंचित कर उनकी अपेक्षा करना एक प्रवंचनामात्र है, जो परस्पर विद्वेष का कारण बनता है। आत्मा को आधार बनाकर व्यवहार करना तो वहाँ परिलक्षित ही नहीं होता; क्योंकि वहाँ तो लक्षित होता है - वर्गविशेष, दलविशेष एवं व्यक्तिविशेष। माता-पिता के लिए सभी शिशु प्रिय होते हैं और वह आवश्यकतानुसार उनके प्रति वैसा ही व्यवहार करते हैं। राजा या अध्यात्म क्षेत्र के व्यक्ति मातृहृदय ही होते हैं या होने चाहिएँ। वेद के शब्दों में उन्हें कहें तो वे आत्मा के स्तर पर जीने वाले व्यक्ति होते हैं।

इस प्रकार के आत्मा के स्तर पर अधि आत्मनि जीवित या व्यवहार करने वाले व्यक्ति आततायियों के सम्पूर्ण समूह को नष्ट कर देने या करा देने पर भी वे आध्यात्मिक ही हैं। जैसे सूर्य के प्रकाश में अनेक अन्धकारप्रिय अर्थात् भूतों को पीड़ित करने वाले जीव जन्तु नष्ट हो जाते हैं, किन्तु सूर्य उसके लिए अपराधी नहीं होता है। सूर्यवत् आत्मावस्थित व्यक्ति भी कभी किसी वर्गविशेष या जाति के प्रति आग्रही नहीं होता। उसके सम्मुख तो परमात्मतत्त्व आदर्श रूप में अवस्थित रहता है।

वर्तमान में ऐसी ही अध्यात्म तत्त्व की यथार्थ व्याख्या की और उसको जीवन में लाने की आवश्यकता है, किसी विशेष वाह्य धार्मिक चिन्ह या उपकार के लिए उपदेश की आवश्यकता नहीं; क्योंकि अध्यात्म में अवस्थित होने पर ये वाह्य क्रियाकलाप स्वतः ही प्रस्फुटित होंगे। इसके बिना वाह्य आवरण, आचार तो केवल एक वञ्चना या आडम्बर मात्र है। जो लोग अध्यात्म के नाम से पहले या अब इस प्रकार वर्ग, सम्प्रदाय या जाति-विशेष के लिए सुविधा प्रदान करने की बातें कर रहे हैं, उनका सर्वथा परित्याग कर सच्चे वैदिक अध्यात्म तत्त्व -

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।
अथर्ववेद - 19/15/6

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।
..... सर्वभूतहिते रताः।।
.... वसुधैव कुटुम्बकम्।।

का व्यावहारिक प्रचार एवं उद्घोष करना चाहिए, तभी विश्व का कल्याण होगा। परमात्मा छद्मपूर्ण अध्यात्मवादियों से राष्ट्र एवं विश्व की रक्षा करो।

- कुलाधिपति, गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल, टीकरी, मेरठ, उत्तर प्रदेश

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/- रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

स्वामी अग्निवेश जी पर अनर्गल प्रलाप करने वाले अनार्यों से कुछ सवाल

– प्रो. श्योताज सिंह

मैं कई बार और अनेकों अवसरों पर गम्भीर चिन्तन–मनन करते हुए यह सोचने पर बाध्य हो जाता हूँ कि जिस व्यक्ति ने उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त की, कुल की बात करें तो उच्च कुल में जन्म हुआ और सम्पन्न परिवार में जन्में। सम्मानित नौकरी मिली, उसके बावजूद आर्य समाज की पथरीली राह पर क्यों चल पड़े? यह एक यक्ष प्रश्न है। जब मैं इस यक्ष प्रश्न का उत्तर खोजने की, ढूंढ़ने की, जानने की दिशा में बढ़ता हूँ तो पाता हूँ कि यह व्यक्ति, आर्य समाज का जुझारू एवं क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश एक मात्र केवल और केवल वेदों के उद्धारक, भारत की सोई हुई आत्मा को झकझोरने वाले, दर्शनशास्त्रों और वेदों के प्रकाण्ड पंडित महर्षि दयानंद सरस्वती की विचारधारा, उनके मिशन और कार्यों से प्रभावित एवं अनुप्राणित हो अपना सर्वस्व त्याग कर दयानंद के हो गये। लेकिन यह कितनी बड़ी बिडम्बना है, कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि आर्य समाज की सभाओं, संस्थाओं और संगठनों पर प्रारम्भ से कब्जा जमाए बैठे तथाकथित आर्य लोगों ने (मैं यहां यह भी स्पष्ट कर दूँ कि मैं देश–विदेश के आम आर्यजनों की बात नहीं कर रहा) स्वामी अग्निवेश का अपने तुच्छ, कुटिल स्वार्थों की पूर्ति हेतु विरोध करना आज तक जारी रखा है। उन्होंने अपना एक मात्र धर्म अग्निवेश का विरोध माना है।

वर्तमान समय में वस्तुस्थिति यह है कि आज यदि विश्व भर में आर्य समाज की पहचान है तो वह एक मात्र स्वामी अग्निवेश के कारण है। विश्व स्तर की जितनी भी संस्थाएँ–UN, IMF, World Bank, World Economic Forum, इत्यादि और अन्य भी जो संगठन हैं वहां स्वामी अग्निवेश ने वेदों की मान्यताओं और महर्षि दयानंद सरस्वती की विचारधारा एवं मिशन की गहरी छाप छोड़ी है, किन्तु आर्य समाज के नाम पर, दयानंद के नाम पर, हलवा–मांडा खाने वालों को स्वामी अग्निवेश सहन नहीं, बर्दास्त नहीं, आखिर क्यों?

स्वामी अग्निवेश पर इन तथाकथित आर्य समाजियों द्वारा (आर्यों द्वारा नहीं) सबसे बड़ा आरोप यह लगाया जाता है कि वह मुस्लिम परस्त हैं, मुसलमानों की पैरवी करते हैं। इस तथ्य में कोई सच्चाई नहीं हैं। मुसलमानों द्वारा इस्लाम के नाम पर जो भी गैरइस्लामिक काम किये जाते हैं उनका स्वामी अग्निवेश ने मुखर विरोध किया है और करते हैं। जैसे तीन तलाक, हज सब्सिडी, बकरीद पर पशुबलि, मुस्लिम समाज में जातिवाद आदि आदि.....हाँ, यदि कोई मुसलमानों की उचित मांग है, न्यायोचित है, तो उसका समर्थन भी करते है।

स्वामी अग्निवेश मानवता और इंसानियत की बात करते हैं। किसी के पक्ष या विपक्ष की बात नहीं। दूसरे, आज हमें यह तो स्वीकार करना ही होगा कि मुसलमान भी इस देश के नागरिक हैं। यदि विभाजन के समय ही 1947 में हिन्दू–मुस्लिम समस्या का समाधान हो जाता तो अच्छी बात थी, किन्तु ऐसा हुआ नहीं। स्वामी अग्निवेश देश में आपसी भाईचारा, समरसता, साम्प्रदायिक सद्भाव और संवाद् की बात करते हैं, विभाजन या अलगाव की नहीं। यदि मुसलमानों को भी इस देश में रहना है क्योंकि वे यहाँ के नागरिक हैं तो फिर उनके साथ सौहार्द बनाना आवश्यक है या उनके साथ निरन्तर टकराव बना कर रखना। बुद्धिजीवी एवं प्रबुद्धजनों को शांति के साथ सोचना चाहिए। स्वामी जी का मानना है कि टकराव की बजाय सौहार्द का रास्ता सही है। किन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि वे मुसलमानों की गलत बातों का भी समर्थन करते हैं।

स्वामी अग्निवेश ही वह व्यक्ति है जिन्होंने सर्वप्रथम सऊदी अरब के शहंशाह किंग अब्दुल्लाह को वेदों का सैट और सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। ईसाई धर्म के गुरू पोप को वेटिकन में जाकर अध्यात्म पर लिखी अपनी पुस्तक, वेद और सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर आर्य समाज, महर्षि दयानंद और देश का गौरव बढ़ाया। किसी ने क्या आज तक यह साहस कभी किया? स्वामी अग्निवेश जी ने वेटिकन के तत्कालीन पोप के निमंत्रण पर कैथोलिक जगत के सबसे बड़े तीर्थ स्थान सेन्ट फ्रांन्सिस ऑफ आसीसी में जाकर वैदिक विधि से यज्ञ का अनुष्ठान कर उपस्थित जन समूह को (जिसमें भारतीय विद्या भवन के शीर्शस्थ लोग भी थे) इंग्लिश में अर्थ समझाकर मंत्रमुग्ध कर दिया।

न्यूयार्क के विश्व प्रसिद्ध यूनियन थिआलाजिकल सेमिनारी में इसी तरह वैदिक विधि से यज्ञ का अनुष्ठान कर इंग्लिश में अर्थ समझाया–इस कार्यक्रम में स्वयं स्वामी इन्द्रवेश जी, श्री चन्द्रभान आर्य आदि भी उपस्थित थे। उन्होंने अपनी पहली चीन की यात्रा में (1983 में) वहाँ के उपराष्ट्रपति को चीनी भाषा में छपा सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया था। अपनी पहली थाईलैण्ड की यात्रा में आर्यसमाज बैंकाक में अपने प्रवचन पर जब उन्होंने पूछा कि क्या थाई भाषा में सत्यार्थ प्रकाश है? जब उत्तर न में मिला तो वहीं अपील कर धन जुटाया गया और एक वर्ष बाद जब दुबारा गये तो स्वामी जी ने थाई भाषा में सत्यार्थ प्रकाश का विमोचन किया।

स्वामी अग्निवेश ने अपने 50 वर्षों के सामाजिक–धार्मिक जीवन में जो कार्य किये हैं और कर रहे हैं वे सब स्वामी दयानंद की विचारधारा, उनके मिशन और वेदों की मान्यताओं और धारणाओं के अनुरूप ही किये हैं। बंधुआ मजदूरी, बाल मजदूरी, नर–नारी विषमता, सती–प्रथा, कन्याभ्रूण हत्या, शोषण, अत्याचार, इत्यादि के उन्मूलन और आदिवासी, दलित, वंचित वर्गों के उत्थान के लिए उनकी न्यायोचित मांगों के समर्थन में उन बेजुबान लोगों की आवाज बनकर जो अभियान उन्होंने चलाए और आन्दोलन किये वे सबके सामने हैं। फिर भी कुछ लोग जो अपने को दयानंदी कहलाने की कोशिश करते हैं स्वामी अग्निवेश जी की बात पचा नहीं पा रहे। क्यों? आप स्वयं सोचें।

जब स्वामी अग्निवेश ने समकालीन दासता में जकड़े मजलूमों, वंचितों, दलितों, आदिवासियों की दयनीय स्थिति, उनके शोषण, उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाई तो इन्ही तथाकथित आर्य समाजियों ने उन पर 'साम्यवादी' होने का ठप्पा लगाने का कुत्सित प्रयास किया था।

स्वामी अग्निवेश की यह मान्यता है कि वेद ज्ञान के भण्डार हैं। वेदों में हर प्रकार की विद्या, विधा भरी पड़ी है, यथा विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति, समाजशास्त्र, कला, संगीत, गायन, इत्यादि का अकूत खजाना भरा पड़ा है। आवश्यकता इस बात की है कि उस खजाने को पाने के लिए अध्ययन और शोध एवं अनुसंधान की जरूरत है। इसके लिए वेदों के विद्वानों, पारखियों को आगे आना चाहिए। इसीलिए स्वामी अग्निवेश का आह्वान है कि 'आओ! वेदों की ओर लौटें' समाज, देश और दुनिया को धार्मिक पाखण्ड, अन्धविश्वास, अन्धभक्ति, गुरूडम, आस्था के नाम पर शोषण–उत्पीड़न से निजात दिलाकर वैज्ञानिक चिन्तन, सोच–समझ को बढ़ावा देने के उद्देश्य को लक्ष्य बनाकर एक सक्रिय जन जागरण अभियान–आन्दोलन का सूत्रपात करें। स्वामी अग्निवेश इसी उद्देश्य और लक्ष्य को सामने रखकर दिसम्बर, 2017 में देश की राजधानी दिल्ली में "विश्व वेद सम्मेलन" की तैयारी में लगे हुए हैं। इसमें जो भी महानुभाव–आर्य समाजी, सनातनी और अन्य सम्प्रदायों के विद्वान अपना सहयोग, समय देना चाहें उनका स्वागत है, अभिनन्दन है। वेद किसी देश, जाति, धर्म, सम्प्रदाय, आदि के नहीं। वे मानवता एवं इंसानियत के लिए ज्ञान के भण्डार हैं।

– महामंत्री, बंधुआ मुक्ति मोर्चा

आर्यनेता प्रेमप्रकाश शर्मा की धर्मपत्नी उषा शर्मा जी की श्रद्धांजलि सभा

चींटी और हाथी में अत्यन्त सूक्ष्म व समान एक आत्मा है जो दोनों के शरीरों को चलाती है

–पीयूष शास्त्री

ज्ञातव्य हो कि देहरादून में आर्य समाज के प्रसिद्ध आर्य नेता तथा वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के यशस्वी मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती उषा शर्मा जी का 11 सितम्बर, 2017 को निधन हो गया था। माता उषा शर्मा जी के निधन पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें एक धर्मपारायणा सद्ग्रहणी ममतामयी माता तथा सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने वाली विदुषी माता बताया। उन्होंने कहा कि माता उषा जी अपने पति श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी के कार्यों में कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करती थीं। उनके निधन से निश्चय ही आर्य समाज को गहरा आघात लगा है। मैं परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ।

आज दिनांक 17 सितम्बर, 2017 को अपरान्ह 2.00 बजे से 4.00 बजे तक देहरादून के प्रसिद्ध आर्यनेता और वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के यशस्वी मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती उषा शर्मा जी की श्रद्धांजलि सभा देहरादून के रामतीर्थ मिशन सभागार में भारी संख्या में उपस्थित लोगों द्वारा श्रद्धापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। सभा के आरम्भ में आर्यसमाज लक्ष्मण चौक के विद्वान पुरोहित श्री रणजीत सिंह जी का विद्वतापूर्व प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंनें आत्मा की नश्वरता को बताते हुए अनेक महत्वपूर्ण बातें कही। श्री रणजीत सिंह जी ने ऋषि दयानन्द के शरीर छोड़ने के अन्तिम क्षणों को स्मरण कराया और कहा कि उन्होंने योगावस्थित होकर ईश्वर की प्रार्थना करते हुए कहा था कि 'हे ईश्वर! तूने अच्छी लीला की। तेरी इच्छा पूर्ण हो।' विद्वान पुरोहित ने कहा कि श्राद्ध का अर्थ वृद्धों की श्रद्धा के साथ सेवा करना होता है। उन्होंने व्यंगोक्ति में कहा कि 'जीवित पिता से दंगम–दंगा मरने बाद उसे पहुंचायें गंगा'। उन्होंने कहा कि मिट्टी में मिलने और मिलाने को मृत्यु कहते हैं। पुरोहित जी ने कहा कि संसार में मौत की घड़ी को कोई टाल नहीं सकता। माता उषा शर्मा जी की दिवंगत आत्मा को उन्होंने अपनी श्रद्धांजलि दी।

प्रसिद्ध आर्य पुरोहित पंडित वेदवसु शास्त्री जी ने श्रीमती उषा शर्मा जी का परिचय दिया। उषा शर्मा जी का जन्म अल्मोड़ा में पिता श्री जे.एस. शर्मा और माता श्रीमती शकुन्तला शर्मा जी के यहां सन् 1951 में हुआ था। पिता इंजीनियर थे। श्रीमती उषा जी स्नातिक थी और 6 बहिन व भाईयों में सबसे बड़ी थीं। हाईडल विभाग में एएसडीओ के पद पर कार्यरत श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी से उनका विवाह सन् 1971 में हुआ था। माता उषा शर्मा जी ने एक पुत्री अनीता को जन्म दिया। माता उषा शर्मा जी के गुणों का वर्णन कर पं. वेदवसु शास्त्री जी ने बताया कि वह मृदु–भाषिणी, तीव्र बुद्धि एवं दुःखों में अविचलित व अटल रहने वाली महिला थी। सभी के प्रति शिष्टता उनका स्वभाव था। वह अपने यहां आगन्तुकों को बड़े प्रेम से भोजन कराती थीं। विनायक, दीपिका, नीतिका आदि उनके भतीजे व भतिजियां हैं तथा आर्यन एवं उत्कर्ष उनके दो नाती हैं। वह शान्त रहा करती थी। पुरोहित जी ने विकासनगर में उनके द्वारा चिकित्सा कैम्प लगाने व उसमें बढ़ चढ़ कर सहयोग करने और वहां रोगियों की निःशुल्क किये जाने के संस्मरण भी सुनाये। उन्होंने बताया कि वह होम्योपैथी की एक योग्य चिकित्सिका थीं। डाकपत्थर में 21 कन्याओं के सामूहिक विवाहों का उल्लेख कर पुरोहित जी ने कहा उसमें उनकी सक्रिय भूमिका थी और उन्होंने उन कन्याओं को आवश्यकता का सभी सामान उपलब्ध कराया था। अपने जीवन काल में माता उषा शर्मा जी ने अपने सम्पर्क में आने वाले सभी को सुख पहुंचाने का प्रयास किया। उन्होंने अपना ध्यान नहीं रखा। वह कभी घबराती नहीं थी। उन्होंने कभी किसी के सामने अपने दुःख प्रकट नहीं किये। रूग्ण होने पर परिवार के सभी लोगों ने उनकी दिलो–जान से सेवा की। पण्डित जी ने डाक्टरों के नाम बतायें जिन्होंने उनकी चिकित्सा की और कहा कि सभी डाक्टरों ने माता जी को स्वस्थ करने के पूर्ण प्रयास किये। वह लगभग दो माह तक वेंटिलेटर पर रहीं। 11 सितम्बर, 2017 को 67 वर्ष की आयु में उनकी जीवन लीला समाप्त हुई। पं. वेदवसु शास्त्री जी ने कहा कि माता जी दैनिक यज्ञ की तैयारी करती थी। अनीता और अनिल उनकी पुत्री एवं दामाद हैं। शास्त्री जी ने एक भजन भी सुनाया जिसके आरम्भ के शब्द थे 'गति जीवात्मा की कोई समझाये। कहां से ये आये और कहां लौट जाये।।' पं. वेदवसु शास्त्री जी के भजन के बाद आर्य पुरोहित एवं प्रभावशाली वक्ता श्री पीयूष शास्त्री ने अपने व्याख्यान के आरम्भ में मैथिली शरण गुप्त की कविता की दो पंक्तियां प्रस्तुत कीं। वह हैं 'बड़ी करीब से उठकर चला गया कोई, न हम हाथ पकड़ सके, न थाम सके उसका दामन।।'

पीयूष जी ने कहा कि आत्मा एक सूक्ष्म तत्व है। यह शरीर से निकल जाती है और हम सामने होते हुए भी इसे देख नहीं पाते। आत्मा अवश्य कोई चीज है। वैज्ञानिकों ने भी इसे जानने का प्रयास किया। उन्होंने एक प्रयोग किया कि मृतक को मृत्यु से पूर्व एक तुला पर लेटा दिया। उसका भार नोट कर लिया। मृत्यु के तुरन्त बाद फिर उसका भार नोट किया। दोनों में 20 ग्राम का अन्तर था। वैज्ञानिकों ने कहा कि आत्मा का भार मात्र 20 ग्राम है। पीयूष शास्त्री जी ने कहा कि चींटियों में भी वही आत्मा है जो मनुष्य में है। 20 ग्राम में तो हजारों चीटिंया अर्थात् जीवात्मायें आ जाती है अतः जीवात्मा का भार 20 ग्राम नहीं अपितु इससे भी अति न्यून है। इस कारण जीवात्मा 20 ग्राम का है, वैज्ञानिक सिद्धान्त न बन सका। पीयूष जी ने कहा कि एक छोटी सी आत्मा ही 10 क्विंटल व उससे अधिक भार वाले हाथी के शरीर को भी चलाती है। वही आत्मा चींटी में भी है और इसे भी चलाती है। आचार्य पीयूष जी ने कहा कि जो जितना सूक्ष्म होता है वह उतना अधिक शक्तिशाली होता है।

पं. पीयूष शास्त्री ने कहा कि जीवित शरीर देखता, सुनता है और अनेक क्रियायें करता है। शरीर से आत्मा के निकल जाने पर शरीर कोई काम नहीं कर पाता। शरीर में आत्मा के रहने पर ही शरीर काम करता है। इससे सिद्ध होता है कि आत्मा की ही कीमत है शरीर की नहीं।

श्री पीयूष शास्त्री के बाद तपोवन आश्रम के पुरोहित पं. सूरत राम जी का प्रवचन हुआ। उन्होंने एक वेद मंत्र का पाठ कराया और कहा कि अन्त्येष्टि संस्कार शरीर का अन्तिम संस्कार है। यदि वैदिक रीति से अन्त्येष्टि करें तो इसके बाद मृतक के प्रति अन्य कोई कर्म वा कर्तव्य शेष नहीं रहता। मात्र घर का शोधन ही करना होता है। पुराहित जी ने मृतकों की बरसी व उनका श्राद्ध करने की परम्परा की चर्चा भी की। उन्होंने कहा कि यह सभी कृत्य वेद की दृष्टि से अनावश्यक एवं अनुचित हैं। इन्हें करने से मृतक आत्मा व करने वाले को कोई लाभ नहीं होता। परिवार के जीवित लोगों के प्रति कर्तव्यों का पालन करना ही धर्म है।

इसके बाद आचार्या डा. अन्नपूर्णा का प्रवचन हुआ। पहले उन्होंने अपनी एक शिष्या के साथ मिलकर भजन गाया। उन्होंने कहा कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मष्यु निश्चित है। उनके अनुसार जो पुरूष के धर्म और कर्तव्य को निभाने में साथ दे वह धर्मपत्नी कहलाती है। उन्होंने जाति, आयु और भोग की भी चर्चा की व उस पर प्रकाश डाला। गुरुकुल पौंधा के आचार्य चन्द्र भूषण शास्त्री जी ने भी सभा को सम्बोधित किया और माता उषा शर्मा जी को अपनी श्रद्धांजलि दी। जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, देहरादून के प्रधान श्री शत्रुघ्न मौर्य ने दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावनायें प्रस्तुत कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और श्री प्रेम प्रकाश शर्मा को जीवन में हर प्रकार का सहयोग करने का आश्वासन दिया। श्री विनायक शर्मा ने अनेक संस्थाओं से आये शोक व श्रद्धांजलि सन्देशों के प्रेषकों व संस्थाओं के नामों का परिचय वा जानकारी दी। डा. विनोद कुमार शर्मा एवं श्री उम्मेद सिंह विशारद सहित अनेक व्यक्तियों ने भी दिवंगत आत्मा की शान्ति व सदगति के लिए श्रद्धा वचन कहे। अन्त में एक मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा के प्रति ईश्वर से प्रार्थना की गई। इसकी समाप्ति पर पगड़ी की रस्म हुई। पंडित जी ने श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी के बड़े नाती आर्यन को पगड़ी बांधी। इसी के साथ आज की श्रद्धांजलि सभा समाप्त हुई। हमने जीवन में पहली बार देखा कि किसी श्रद्धांजलि सभा में देहरादून का विशाल सभागार पूरा भरा हुआ था और उसके बाहर भी बहुत बड़ी संख्या में स्त्री पुरुष खड़े हुए थे। पार्किंग में भी वाहन खड़ा करने के स्थान नहीं था। इसका कारण शर्मा जी का सामाजिक कार्य और निजी सद्–व्यवहार है। हमने अपने जीवन में देखा है कि उन्होंने अपने व्यवहार से अपने विरोधियों को भी अपना बनाया है। हम स्वयं भी कभी उनसे दूर थे। यदि कोई व्यक्ति जीवन में उनसे दूर हुआ तो हमने अनुभव किया यह उस व्यक्ति का अपना अहंकार व स्वार्थ ही था। शर्मा जी न केवल आर्य संस्थाओं को अपनी सेवायें देते हैं अपितु बड़ी बड़ी धनराशि भी दान करते हैं। इसी के साथ इस जानकारी को यहीं पर विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

– मनमोहन कुमार
पताः 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
फोनः09412985121

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

पृष्ठ–1 का शेष

'मिशन आर्यावर्त एप्प' का विधिवत किया गया शुभारम्भ

सर्वसम्मति से पारित किया गया।

बैठक के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी ने सभी कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे जीन्द के सम्मेलन को सफल बनाने के लिए अभी से कमर कस लें और अधिक से अधिक लोगों को सम्मेलन में लाने का प्रयास करें। इसी प्रकार गुरुकुल लाढ़ौत, जिला–रोहतक के वार्षिकोत्सव पर 15 अक्टूबर, 2017 को पाखण्ड खण्डन सम्मेलन विशेष रूप से आयोजित किया जायेगा। 15 अक्टूबर को ही गुरुग्राम जिले के खेड़ला ग्राम में वैदिक सोम आश्रम में पाखण्ड खण्डन सम्मेलन होगा। इसका संयोजन स्वामी विजयवेश जी करेंगे। इसी प्रकार सोनीपत में आयोजित होने वाले सम्मेलन में संयोजक प्रिं. आजाद सिंह बांगड़, कैथल सम्मेलन के संयोजक डॉ. होशियार सिंह व जयपाल आर्य तथा हिसार सम्मेलन के संयोजक श्री दलबीर सिंह आर्य होंगे। कार्यक्रमों को विशेषरूप से सहयोग प्रदान करने के लिए बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, श्री वेद प्रकाश आर्य सिंहपुरा, श्री धर्मवीर सरपंच, श्री ऋषिराज शास्त्री, श्री हरपाल आर्य, श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, श्री प्रवीण आर्य, श्री रामवीर आर्य, सुनीता आर्या आदि ने भी अपने सुझाव रखे। बैठक में श्री अर्जुन सिंह, श्री राजवीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह आर्य, श्री रामपाल शास्त्री, मा. प्रदीप, श्री अजयपाल आर्य, श्री अजीतपाल आर्य, श्री जयवीर सोनी, श्री प्रवीण आर्य, श्री शीशराम आर्य, डॉ. राजपाल आर्य, श्री सत्यपाल सरपंच, श्री दयानन्द आर्य, श्री बाबूलाल आर्य, श्री धर्मपाल सिंह एडवोकेट, डॉ. भूप सिंह, श्री रामचन्द्र यादव एडवोकेट आदि महानुभाव बैठक में उपस्थित थे।

बैठक को विशेष उद्‌बोधन देते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया। स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुमीत उर्फ राम–रहीम के प्रकरण की पूरी पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि अब आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को पाखण्ड के विरुद्ध मजबूती के साथ प्रचार में जुट जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि धर्म के नाम पर चलाये जा रहे समस्त डेरे आज संदेह के घेरे में आये हुए हैं, क्योंकि वहाँ धर्म के बदले अधर्म तथा पाप फल–फूल रहा है। गुरमीत राम–रहीम हो, रामपाल दास हो या आसाराम बापू हो जो भी वेद के विरुद्ध चलकर पाखण्ड फैलाने में संलिप्त हैं उन सभी को देर–सवेर जेल की सलाखों के भीतर जाना ही पड़ेगा।

स्वामी जी ने कहा कि हमारी लड़ाई व्यक्ति से नहीं है किन्तु वेद विरुद्ध प्रचलित पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सैकड़ों साल पहले पाखण्ड के विरुद्ध बिगुल बजाया था हरिद्वार कुम्भ के मेले में सन् 1867 में पाखण्ड–खण्डिनी पताका फहराकर समस्त अवैदिक मत–मतान्तरों को चुनौती दी थी। आज एक बार फिर समय आ गया है कि पाखण्ड के विरुद्ध आर्य समाज राष्ट्रव्यापी अभियान चलायेगा। स्वामी आर्यवेश जी ने राम–रहीम को

सज़ा देने वाले जज को साहस एवं बहादुरी का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि ऐसे साहसी जज का आर्य समाज हृदय से अभिनन्दन करता है। राम–रहीम के विरुद्ध जिन दो बहनों ने संघर्ष करके अपने बयानों को अन्तिम समय तक बनाये रखा और अनेक दबाव एवं लालच देने के बावजूद वे टस से मस नहीं हुई, ऐसी बहादुर बहनों को भी समस्त आर्य समाज साधुवाद देता है। दुनियाँ में धर्म एवं न्याय ऐसे ही बहादुर लोगों के बूते पर जीवित रहता है।

इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा सोशल मीडिया में अपनी पहुँच को और अधिक सुदृढ़ बनाने के प्रयास के अन्तर्गत मोबाइल एप्प 'मिशन आर्यावर्त' का शुभारम्भ किया गया। महर्षि दयानन्द के विचारों के प्रचार–प्रसार व आर्य समाज की विभिन्न गतिविधियों से आम जनता को परिचित करवाने के उद्देश्य से मिशन आर्यावर्त के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य के प्रयासों से तैयार किया गया 'आर्यावर्त एप्प' एक प्रभावशाली कार्यक्रम सिद्ध होगा। इस एप्प का उद्‌घाटन स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ में किया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि समाज में तकनीकी का बोलबाला है। आर्य समाज की यह पहल सभी लोगों तक वैदिक विचारधारा को पहुँचाने में मददगार साबित होगी। ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने बताया कि इस एन्ड्राइड एप्प के माध्यम से वैदिक साहित्य से लेकर वेदों का सार एक क्लिक पर उपलब्ध रहेगा और आर्य समाज द्वारा चलाई जा रही विविध सामाजिक गतिविधियों को एप्प में प्रमुखता से स्थान दिया जायेगा। बैठक के उपरान्त उपस्थित कार्यकर्ताओं को स्वामी आर्यवेश जी ने सम्मानित भी किया।

शिक्षा हो या खेल किसी भी क्षेत्र में कम नही बेटियां–पूनम आर्या

सफलता चमत्कार से नही कठोर मेहनत से मिलती है– प्रवेश आर्या

सुधार की शुरुआत स्वयं से करें– नरेश कुमार

जींद (19.09. 2017) : बेटी बचाओ अभियान व युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधान में जींद जिले के गाँव बरसोला के राजकीय हाई स्कूल में बेटी बचाओ पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या रही व मुख्य वक्ता बहन प्रवेश आर्या रही। कार्यक्रम का संयोजन स्कूल के गणित अध्यापक नरेश कुमार ने किया। प्राचार्य जितेन्द्र सिवाच ने सबका आभार प्रकट किया। मुख्य अतिथि बहन पूनम आर्या ने कहा कि शिक्षा व खेल आज सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं इन दोनों में आज बेटियां सबसे आगे हैं। ओलम्पिक से लेकर 10वीं व बारहवीं के परीक्षा परिणाम समाज को आइना दिखाने वाले रहे। जिनमे बेटियों ने देश का नाम दुनिया में रोशन किया। इसलिए आज बेटियों को बेहतर सुविधाएं देनी जरूरी हैं। उनको भी लड़कों के समान अवसर मिलने चाहिए। उनको भी मान सम्मान व स्वाभिमान से जीने का अधिकार देने की आवश्यकता है। यदि हम सब मिलकर ये कर पाए तो समाज परिवर्तन से कोई नही रोक सकता। उन्होंने ये भी कहा कि वंश चलाने के नाम पर आज कन्या भ्रूणहत्या की जा रही है लेकिन याद रखना चाहिए वंश उनके ही चलते हैं जिनके काम अच्छे होते हैं। जो जीवन की शुरुवात ही कन्या हत्या के पाप से करे ,उनका वंश कैसे चलेगा।

मुख्य वक्ता बहन प्रवेश आर्या ने अपने विचार रखते हुये छात्र व छात्राओं को कहा कि सफलता मिलना कोई चमत्कार नहीं है बल्कि कठोर मेहनत का परिणाम है। आपको जीवन में सफलता के चर्म तक पहुंचना है तो अपने जीवन में अनुशासन व दृढ़ निश्चय व सतत साधना को अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि आप अपनी दिनचर्या में सिर्फ सकारत्मक विचारों को शामिल रखें। अनावश्यक बातों से बचें।

नरेश कुमार ने विद्यार्थियों को कहा यदि आप समाज में रोल मॉडल की भूमिका निभाना चाहते हैं तो अच्छाई की शुरुआत स्वयं से करनी पड़ेगी तभी समाज व राष्ट्र में परिवर्तन तेजी से आएगा। हमे सिर्फ पत्तों को नही सींचना बल्कि हमे जड़ों में पानी देना शुरू करना है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान दीक्षेन्द्र आर्य, बेटी बचाओ अभियान के सदस्य इंदु आर्या, रीमा आर्या के अतिरिक्त जीतेन्द्र सिवाच मुख्याध्यापक , कृष्ण कुमार व जोगिंद्र गोयत प्रवक्ता , कुलदीप विज्ञान अध्यापक, नरेश कुमार गणित अध्यापक , अशोक पी टी आई, कर्ण सिंह हैड टीचर व श्रीमती अजीत हैड टीचर व अजीतपाल सहित समस्त स्टाफ मौजूद रहा ।

वैदिक जीवन मूल्यों की सार्वभौमिकता

- डॉ० स्नेहलता गुप्ता

चारों वेद मानवीय मूल्यों के निर्णायक ग्रन्थ हैं। योग के यम नियमों, धर्म के दसों लक्षणों और चारों पुरुषार्थों के जीवन्त उदाहरण हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह[१क] तथा शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान[ख]– ये यम नियम, धैर्य, क्षमा (इन्द्रियों का) दमन, अस्तेय, शौच (पवित्रता) इन्द्रिय–निग्रह बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध (क्रोध न करना) – धर्म के ये दस लक्षण,[२क] धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष– ये चारों पुरुषार्थ ये सब मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत हैं। ऋग्वेद के एक मन्त्र में संक्षेप में इनको सप्तमर्यादा के रूप में परिगणित करते हुये लिखा है कि– हिंसा, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्यभाषण और इन पापों को करने वाले दुष्टों के सहयोग का नाम सप्त मर्यादा है, इनमें से जो एक भी मर्यादा का उल्लंघन करता है अर्थात् एक भी पाप करता है, वह पापी होता है।[३]

हिंसा का निषेध करते हुए यजुर्वेद (वा०स०– ६/६२) में लिखा है कि मनुष्य को न तो सर्प के समान विषैला होना चाहिये और न व्याघ्रादि के समान हिंसक। वेदों में पशुवध और मांस भक्षण को पूर्णतया अनुचित माना है।[४] और 'मा हिंसी' शब्द के द्वारा यत्र तत्र इसका विरोध भी किया है। यज्ञ को अध्वर कहने का तात्पर्य यज्ञ के अहिंसक होने का ही पर्याय है।[५] महाभारत के अनुशासन पर्व में हिंसा के विपरीत लिखा है कि, अहिंसा परम धर्म है, परम तप है, परम सत्य है, इसी से धर्म प्रवर्तित होता है,[६] किन्तु हिंसा के भय से ग्रस्त मनुष्य सदाचार के पथ से विचलित होकर पाप करने के लिये प्रवृत्त हो सकता है इस भय से छुटकारा पाने का किसी भी ग्रन्थ में अथवा अन्यत्र कोई उपाय नहीं है, हाँ वेदों में अवश्य ही अभय प्राप्ति का एक ऐसा मन्त्र है, जिसमें मित्र से, शत्रु से ज्ञात से, अज्ञात से, रात्रि में, दिन में एवं समस्त दिशाओं में भय रहित होने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई है।[७] इस प्रकार भयरहित एवं अहिंसक व्यक्ति की शान्ति प्रिय होता है। और शान्ति का अभिप्राय है– ईर्ष्या, द्वेष, कलह और लड़ाई आदि की निवृत्ति, राग द्वेष दुःख दरिद्रता की समाप्ति, पशु पक्षियों की हत्या से उत्पन्न करुण क्रन्दन का अन्त, वृक्षों पर चलती हुई कुल्हाड़ी की रोक। अथर्ववेद का ऋषि मानवों को परामर्श देता हुआ कहता है कि जीवन रूपी पथरीली नदी बह रही है, उठो और प्रयत्न से पार करो, जो हमारे कल्याण के विरुद्ध हैं, उनका साथ छोड़ों।[८] इस प्रकार वैदिक विचारधारा अहिंसा की पक्षधर होने पर भी शत्रुओं के विनाश की कामना करती है। **शठे शाठ्यं समाचरेत्** की नीति को उचित ठहराती है।[९] विरुद्ध आचरण करने वाले व्यक्तियों को भस्मसात् करने का आदेश देती है।[१०] किन्तु आज हमारे देश में राजनीति के नियम कानून भी वेदों के इस मानवीय मूल्य का उपहास कर रहे हैं। एक मुजरिम जो हमारे लोकतन्त्र के प्रतीक संसद भवन पर हमला करता है, वहां के रक्षकों को मौत के घाट उतार देता है, पुलिस उसे पकड़ती है और न्यायालय उसे फांसी की सजा सुनाता है देश की जनता २० अक्टूबर २००६ पर (जिस दिन उसे फांसी की सजा होनी निश्चित हुई थी) नजरे गड़ाये रही किन्तु देश के विश्वासघाती राजनेताओं ने अपनी कुर्सी की सुरक्षा के लिये उसे फांसी नहीं होने दी। जेल में भी उसे सारी सुख सुविधायें उपलब्ध हैं।

शत्रुओं के लिये अथर्ववेद में लिखा है कि शत्रुओं को राजा बाहु छेदन करके विनष्ट कर दे। ऋग्वेद में स्थान–स्थान पर चोर हिंसक व्यभिचारी घृतव्यसनी स्तेन तस्कर आदि विभिन्न प्रकार के समाज विरोधी शत्रुओं को समूल नष्ट करने का संकेत है (ऋग्वेद–२/२३/१६, ऋग्वेद– ६/५५/३) किन्तु इस प्रकार शत्रुओं के विनाश में प्रयत्न तथा युक्ति से काम लेना चाहिये (अथर्ववेद– ४/३२/३) क्योंकि सब काम धर्मानुसार सत्य असत्य को विचार कर करने चाहिये। वस्तुतः अहिंसा अनाचार अन्याय और आड़म्बर के दृढ़ दुर्ग सत्य के द्वारा ही धराशायी हो सकते हैं, इसीलिये प्रजापति ने सत्य और असत्य को समझ बूझकर अलग किया है। असत्य में अश्रद्धा और सत्य में श्रद्धा उत्पन्न की है (यजुर्वेद १६/७७)

मानवीय मूल्यों में सत्य का स्थान सर्वोपरि है। त्रिकालदर्शी–ऋषियों ने दैवी जगत के सत्य को 'ऋत्' और लौकिक जगत के सत्य को 'सत्य' कहा है। वेद में **ऋत् च सत्यञ्चायीद्धात्तपसोऽध्यजायत** (अथर्ववेद १२/१/१) कह कर ऋत और सत्य का एक साथ भी उल्लेख है। ऋग्वेद (१०/६२/३) में यज्ञ को ऋत का साक्षात् स्वरूप मानते हुए लिखा है कि यज्ञ करना मानो सत्य को ही प्रतिष्ठापित करना है। इसी सत्य स्वरूप ऋत के मार्ग का अनुसरण समस्त पापों का विनाशक है ऋग्वेद १/४/१ सत्यता के साथ–साथ वाणी की मधुरता का भी वेदों में उल्लेख है[११] संस्कृत के किसी कवि का कथन है कि **सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।**

लोकाचार में भी यह कहा जाता है कि–

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करें, आपहु शीतल होय।

किन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह भी चलता है–

ऐसी वाणी बोलिये, कि सबसे झगड़ा होय।
पर उससे झगड़ा ना करें, जो आपसे तगड़ा होय।

वस्तुतः आज ऋत का स्थान अनृत ने, सत्य का असत्य ने, संयम का असंयम ने, धर्म का अधर्म ने, सन्तोष का असन्तोष ने, कर्त्तव्य निष्ठा का कर्त्तव्य हीनता ने और शीलता का अश्लीलता ने ले लिया है। आज की भांति वेदकालीन युग में मानव के पास कोठी, बंगले, गाड़ी, दूरदर्शन आदि भोग ऐश्वर्य के साधन नहीं थे वे तो अन्न, धन, गौओं पशुओं, कीर्ति प्रजा (पुत्र, पुत्री, पौत्र, पौत्री आदि) को ही ऐश्वर्य समझ कर (अथर्ववेद १/३१/४) इनकी याचना करते थे,[१२] किन्तु आज का युग परिवार नियोजन का युग है संयुक्त परिवारों का स्थान छोटे परिवारों ने ले लिया है।

ऋग्वेद का ऋषि कहता है कि वही स्त्री श्रेष्ठ है जो ब्रह्मचर्य धारण कर वीर पुत्रों को जन्म देने वाली और सहन शील स्वभाव वाली है।[१३क] उग्र वर्चस्विनी कठिन गुण कर्म स्वभाव वाली थी एवं शोभा से सम्पन्न नारियां ही समाज में समादृत होती हैं।[ख] ऐसी स्थिर स्वभाव वाली ओजस्विनी नारियां वेद के युग की शोभा थीं। उस काल में नारियों को यह आदेश भी था कि उनके ओष्ठ प्रान्त और कटि का निम्न भाग भी न दिख सके। (ऋग्वेद ८/३३/१६) कहाँ पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित आज की स्वच्छन्दचारिणी मल्लिका शेरावत जैसी नारियाँ।

नारियाँ आज ऐसी बनी मार हैं,
न लज्जा से जिनका सरोकार है।
होड़ फैशन की हरदम लगी है यहाँ,
थोड़े, कपड़ों में नंगा बदन आज है।

लोपामुद्रा, गार्गी जैसी नारियों से गौरवान्वित था वह वेद का युग, जहाँ नारी–आदर्श बहन, आदर्श पत्नी व आदर्श माता थी। वैदिक युग का वह सुदृढ़ समाज ऐसे परिवार की कल्पना करता था, जहां माता–पिता सन्तान के कल्याण की कामना करते थे वहां पुत्र भी अपने माता–पिता के कल्याण की कामना करता था।[१४] (अथर्ववेद १/३१/४) ईश्वर की स्तुति द्वारा वह अपने साथ–साथ पिता द्वारा किये गये पापों से भी मुक्ति की याचना करता था। (ऋग्वेद ७/८६/५) वेद के परवर्ती युग उपनिषद काल में इसका स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है।

कठोपनिषद् का दृष्टान्त है वाजश्रवस ऋषि का पुत्र नचिकेता जब देखता है कि उसके पिता दूध देने में असमर्थ बूढ़ी गायों को दान कर रहे हैं तब वह व्यथित होकर सोचता है कि ऐसे निकृष्ट दान से मेरे पिता कहीं यजुर्वेद के **अन्धेन तमसावृता**[१५] के अनुसार निम्न गति को प्राप्त न हो जायें, इसलिये वह बीच में ही टोक कर कहता है कि हे पिता मुझे किसे दोगे? पिता के चुप रहने पर और नचिकेता के बार–बार कहने पर पिता वाजश्रवस क्रोधित होकर बोले कि तुझे यम को दूंगा। अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए नचिकेता यमलोक चला गयां अपनी अनुपस्थिति में तीन दिन मे से भूखे प्यासे नचिकेता को यम ने अतिथि मानकर तीन वरदान दिये। पहले वरदान में नचिकेता ने यही मांगा, कि मेरे यहां आने से पिता दुखी न हो तथा मेरे लौटने पर मुझे पहचान कर पहले की भांति प्रेम से व्यवहार करें। यह थी एक पुत्र की पिता के प्रति मंगल कामना।

उपनिषद् काल की भांति वेद के युग में भी कर्मशीलता और दानशीलता का मानवीय मूल्यों में विशेष स्थान था वेद का ऋषि कहता है कि सैंकड़ों हाथों से अर्जन करो और सहस्त्रों हाथों से दान करो[१६क] ऋग्वेद के दसवें मण्डल का एक सौ सत्रहवा सूक्त है। नीति शास्त्र में भी धन की दान भोग एवं विनाश–तीनों गतियों का उल्लेख है।[१६] आज विश्व में धन के सम्पादन और संवर्धन की होड़ है। बुद्धिवादी वर्ग के मस्तिष्क आज यजुर्वेद ३०/३ के **विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।** को भुलाकर **दुरितो** अर्थात् बुराइयों का ही नित्य अविष्कार कर रहे हैं। कपड़ों का उत्पादन बढ़ रहा है पर रुझान नग्नता की ओर है। घोषणा विश्व शान्ति की है, पर तैयारियाँ विश्व विध्वंस की हैं। आज असत् पृथ्वी लोक से उठ कर द्यौलोक को छू रहा है। सत् का दर्शन तक दुर्लभ है।[१७] न जाने हम कब से **सत्यमेव जयते नानृतम्.... धर्म एव जयति नाधर्म** के नारे लगा रहे हैं किन्तु असत्य और अधर्म दोनों ही मानवीय मूल्यों का क्षरण करते हुए विश्व व्यापी होकर विजय श्री प्राप्त कर रहे हैं। भारतीय कालिजों में लड़के लड़कियों के एक से परिधान, हिप्पियों जैसी केश सज्जा, नाच, क्लब, व्यसन, विलास, धूम्रपान, मदिरापान सब पश्चिमीकरण की देन हैं। देश में हर वर्ष सिगरेट की १२१४३ करोड़ की बिक्री हो रही है। मदिरा का बाजार भी ८८०६ करोड़ का है। सिर्फ तम्बाकू की वजह से गत वर्ष ४८ लाख मौतें हुई। सिगरेट शराब दोनों मिलकर कैंसर को जन्म दे रहे हैं। उचित तो यह होगा कि हर वर्ष देश के लाखों लोगों की जान लेने वाले शराब एवं तम्बाकू की कम्पनियों के मालिकों के विरुद्ध हत्या का मुकदमा दर्ज हो।

स्वतः ही अपने मानवीय मूल्यों का विनाश करने वाले हम लोगों ने उस आनन्द के श्रोत मोक्ष प्रदान करने वाले (ऋग्वेद ६/११३/११) परमपिता को भुला दिया है किन्तु जीवन के चिरन्तन सत्य इस मृत्युरूपी संसार सागर को पार करने के लिये उस आदित्य वर्ण को जानने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है।[१८] वेदों में वर्णित ब्रह्म–दर्शन के श्रेय मार्ग को त्याग कर हमने चार्वाक दर्शन[१९] का प्रेय मार्ग अपनाया है। आसुरी उपनिषद् के वाममार्गी व्यभिचारी आचार्यों का हम अनुसरण करने लगे हैं। वाममार्गी कालीतन्त्र में लिखा है कि 'म' अक्षर से आरम्भ होने वाली वस्तुएँ मोक्षदायी हैं[२०] जैसे मद्य, मांस, मछली, मुद्रा (धन) मैथुन और मदिरा के लिये लिखा है कि जो मदिरापान करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता।[२१] नवम्बर २००६ के **हिन्दुस्तान** दैनिक पत्र में बड़े आकर्षक ढंग से एक सूचना प्रकशित थी कि **मेघालय में मदिरा महोत्सव** बताइये जहां मदिरा के नाम पर महोत्सव रचाये जाते हों वहां वेद मन्त्रों की अवमानना कर[२२] आदर्श मानवीय मूल्यों की बात करना व्यर्थ है। वस्तुतः आज भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व ही व्यसनों और विलासों की रंगभूमि बन गया है।

ऋग्वेद (१०/५/६) में लिखा है कि गरूड़ के समान घमण्ड, गीध के समान लोभ, कोक (चिड़ा) के समान काम, कुत्ते के समान मत्सर, उलूक के समान मोह (मूर्खता) और भेड़िये के समान क्रोध को मार भगाइये, अर्थात् अभिमान, लोभ, काम, मत्सर, मोह क्रोध इन षट्विकारों को नष्ट कीजिये[२३] ऋग्वेद में जुआ,[२४] व्यभिचार एवं चोरी जारी[२५] से बचने का पूर्णतया निर्देश है। आज ऐसे बहुत से व्यक्ति कहते हुए मिलते हैं कि हमने थोड़ी सी चोरी कर ली तो क्या हुआ, भगवान् कृष्ण भी तो चोर थे। अपनी सभ्यता संस्कृति और संस्कार को भुलाकर आज बुद्धिजीवी मानव ने उन्नति के नाम पर प्रकृति को विकृत कर दिया है। जंगलों को काटकर वायु को दुर्गन्धित कर दिया है। शिकार खेलकर सृष्टि को अस्वभाविक बना दिया है, मनुष्य अनेक रोगों से पीड़ित है पागलपन बढ़ रहा है। आत्म हत्यायें दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती हैं। मनुष्य को तो यह सोचना चाहिये कि अपनी विवेकशीलता और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण वह समस्त सांसारिक प्राणियों में श्रेष्ठ है। कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने भी अपने काव्य में लिखा है **मानव तुम सबसे सुन्दरतम** अतः मनुष्य मनुष्य ही बना रहे[२६] वह अज्ञान रूपी अन्धकार में न डूबकर[२७] प्रकाश की ओर बढ़ते हुए जगतपिता परमात्मा के उस द्वार तक पहुँचने के लिये प्रयत्नशील हो (अथर्ववेद ८/१/१६) जो श्रद्धा की कंकरीट और विश्वास के सीमेन्ट से बना हो और जिसे संकल्प ने दृढ़ता प्रदान की हो।

हमें गर्व है कि हमारे वैदिक ऋषियों ने वेद के युग की सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों को श्रद्धा विश्वास और संकल्प की दृढ़ता से युगों युगों तक के लिये अमरत्व प्रदान किया। उनके द्वारा स्थापित मानवीय मूल्य एक कालिक व एक देशीय नहीं अपितु सार्वभौम एवं सर्वकालिक हैं। मानवीय मूल्यों का उचित रूप से मूल्यांकन करने के लिये जिन विभिन्न मापदण्डों की आवश्यकता है वे वैदिक वाङ्मय में सर्वत्र विद्यमान है। वेद तो भारतीय ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य, धर्म, संस्कृति और सभ्यता आदि के ही उद्गम स्थल नहीं हैं अपितु सार्वभौम आदर्श मानवीय मूल्यों के भी आधारभूत ग्रन्थ हैं।

उपनिषद् काल की भांति वेद के युग में भी कर्मशीलता और दानशीलता का मानवीय मूल्यों में विशेष स्थान था वेद का ऋषि कहता है कि सैंकड़ों हाथों से अर्जन करो और सहस्त्रों हाथों से दान करो[१६क] ऋग्वेद के दसवें मण्डल का एक सौ सत्रहवा सूक्त है। नीति शास्त्र में भी धन की दान भोग एवं विनाश–तीनों गतियों का उल्लेख है।[१६] आज विश्व में धन के सम्पादन और संवर्धन की होड़ है। बुद्धिवादी वर्ग के मस्तिष्क आज यजुर्वेद ३०/३ के विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। को भुलाकर दुरितो अर्थात् बुराइयों का ही नित्य अविष्कार कर रहे हैं। कपड़ों का उत्पादन बढ़ रहा है पर रुझान नग्नता की ओर है। घोषणा विश्व शान्ति की है, पर तैयारियाँ विश्व विध्वंस की हैं। आज असत् पृथ्वी लोक से उठ कर द्यौलोक को छू रहा है। सत् का दर्शन तक दुर्लभ है।[१७] न जाने हम कब से सत्यमेव जयते नानृतम्.... धर्म एव जयति नाधर्म के नारे लगा रहे हैं किन्तु असत्य और अधर्म दोनों ही मानवीय मूल्यों का क्षरण करते हुए विश्व व्यापी होकर विजय श्री प्राप्त कर रहे हैं।

सन्दर्भ

१क. अहिंसा सत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः। योग दर्शन २/३०
ख. शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमा। योग दर्शन २/३२
२क. धृतिक्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्। मनु स्मृति ६/६२
ख. धर्म अर्थकाममोक्ष – पुरुषार्थ चतुष्टय
३. मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात्।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गेधरुणेषु तस्थौ।। ऋग्वेद १०/५/६
४. येऽश्रद्धा धनकाम्या क्रव्यादा समासते।
ते वा अन्येषां कुम्भी पर्यादधाति सर्वदा। अथर्ववेद १२/२/५६
५. ध्वर इति हिंसायां, तत्प्रतिषेधो अध्वरः यज्ञः इत्यर्थ– ऋ० १/१/४ (सातवलेकर)
६. अहिंसा परमो धर्मः अहिंसा परमं तपः।
अहिंसा परमं सत्यम् ततो धर्म प्रवर्त्तते।। महाभारत–अनुशासन पर्व ४/२५
७. अभयं मित्रादभयमित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु। अथर्ववेद १६/१५/६
८. उत्तिष्ठत प्रतरत सखायोऽश्मन्वती.....
अत्र जहीमो ये असन्नशिवाः शिवान्त्स्योनामुत्तरेमाभिवाजन्।। अथर्ववेद १२/२/२७
९. ऋग्वेद– १/२/७, २/२१/४। यजुर्वेद–३३/५७। सामवेद–८४७
१०. ऋग्वेद–३/१८/१
११. मधुमन्मे निष्क्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद् भूयांस मधु संदृशः।। अथर्ववेद १/३४/३
१२. स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम्
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चस्सम्।
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्। अथर्ववेद १६/७१/१
१३क. सा विट् सुवीरा मरूद्भिरस्तु। सनात्सहन्ती पुष्यन्ति नृम्णम्। ऋग्वेद ७/५६/५
ख. ऋग्वेद–७/५६/६, ऋग्वेद–७/५६/७
१४क. स्वस्ति मात्रा उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गम्यो। अथर्ववेद १/३१/४
ख. अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमना। अथर्ववेद ३/३०/२
१५. असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।। यजुर्वेद ४०/३
१६क. शतहस्त समाहर, सहस्त्रहस्त संकिर। अथर्ववेद ३/३४/५
दानभोगोनाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
ख. यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।। नीतिशास्त्र–३६
१७. असद् भूम्याः समभवत् तद्यामेतिमहद व्ययः।
तद् वै ततो विधूपायत प्रत्यक् कर्त्तारमृच्छत्।। अथर्ववेद ४/१६/६
१८. वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णः तमसः परस्तात्। यजुर्वेद–३१/१८
तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। यजुर्वेद–३१/१८
१९. यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत्।।
चार्वाक् दर्शन सर्वदर्शन संग्रह
२०. मद्यं मासं च मीनं च मुद्रा (टका) मैथुनमेव च।
एते पंच मकारा स्युर्मोक्षदायि युगे युगे। कालीतन्त्र
२१. पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले।
पुनरुत्थाय पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।। कालीतन्त्र
२२. हत्सु पीतासो युधयंन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्। ऊधर्न नग्ना जरन्ते। ऋग्वेद–८/२/१८
२३. उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वायातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्रमृण रक्ष इन्द्र।। ऋग्वेद ७/१०४/२२
२४. जाया तप्यते कितवस्य हीनो माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित्।
ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्ये– षामस्तमुप नक्मेति।। ऋग्वेद १०/३४/१०
२५. ऋग्वेद १/१२५/७
२६. तन्तु तन्वन्रजसो भानुमन्विहि, ज्योतिष्मतः पथो रक्षा धिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो, मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। ऋग्वेद १०/५३/६
२७. अथर्ववेद– ८/१/१०

आंचल छाया गुरुकुल में प्रवेश

कन्या गुरुकुल भुसावर जिला–भरतपुर, राजस्थान में माता या पिता के प्यार से वंचित, उपेक्षित अथवा साधनहीन बेटियों को पढ़ाने तथा संस्कारवान एवं सुयोग्य बनाने के लिए ''आंचल–छाया'' नाम से एक नया विभाग प्रारम्भ किया गया है। जिन बेटियों के माता या पिता नहीं हैं। उपेक्षित हैं। अति निर्धन हैं। ऐसी बेटियों की निःशुलक व्यवस्था आंचल छाया में होगी। केवल कक्षा 4 से 7 तक ही प्रवेश हो सकेगा। परम्परागत गुरुकुलीय शिक्षा, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, संगीत प्रशिक्षण एवं सिलाई प्रशिक्षण सभी को अनिवार्य रूप से दिया जाता है। स्थान सीमित है, शीघ्र सम्पर्क करें।

– प्रियंका भारती, मो.:– 9694892735, 8441087408

तहसील बार एसोसिएशन के तत्वावधान में

गाजियाबाद के वकीलो में हुआ वैदिक न्याय व्यवस्था एवं नैतिकता के विषय में उपदेश

17 सितम्बर 2017 को सिंहानी आर्यसमाज का संपन्न हुआ त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव

14 सितम्बर 2017 को यहाँ पर अधिवक्ताओ के बार एसोसिएशन का चुनाव हुआ जिसमे नई कार्यकारिणी का निर्वाचन संपन्न हुआ। संयोग से आर्यसमाज सिंहानी गाज़ियाबाद के 57 वे वार्षिकोत्सव में आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी का आगमन हुआ था। सो 15 सितम्बर को दोपहर 3 बजे तहसील बार एसोसिएशन के तत्वावधान में "न्याय एवं नैतिकता" विषय में बड़े हाल में व्याख्यान आयोजित किया गया। इस में पूरी कार्यकारिणी के सभी नव निर्वाचित अधिकारी सम्मिलित हुए। बाद में अधिवक्ताओ की जिज्ञासाओं का समाधान पुरुषार्थी जी ने किया। कार्यक्रम लगभग 2 घंटे तक चला। आर्यसमाज की ओर से सत्यार्थप्रकाश, ब्रहमविज्ञान व कर्म फल विवरण पुस्तक बार के पुस्तकालय को भेंट की गई। गाज़ियाबाद में प्रथम बार यह प्रयोग किया गया जो सफल रहा। बार के नव निर्वाचित अध्यक्ष राजकुमार शर्मा जी व सचिव योगेश त्यागी जी ने धन्यवाद किया और कहा की यह अपने आप में अनूठा प्रोग्राम था आगे भी ऐसे कार्यक्रम होते रहना चाहिए। कानपूर डी ए वी के पूर्व छात्र एक मुस्लिम वकील युवक ने भी सिद्धांतो के प्रतिपादन पर अपनी प्रसन्नता प्रगट की। इस कार्यक्रम को आयोजित करवाने में श्री राकेश शर्मा जी, बार एसोसियेशन के पूर्व अध्यक्ष घनश्याम सिंह सेंगर, आर्यसमाज के प्रधान जी के पुत्र आर्य अधिवक्ता श्री ऋषिराज त्यागी जी ने विशेष प्रयास किया।

आर्यसमाज नूर नगर सिंहानी गाजियाबाद का 57वां वार्षिकोत्सव बड़ी ही में धाम से मनाया गया। जिसमे 15 , 16, 17 सितम्बर का त्रिदिवसीय प्रोग्राम हुआ। भजनोपदेशक श्री अजय संगीत प्रभाकर मेरठ ने हर सभा में अलग अलग विषयों पर उत्तम भजन सुनाये। आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी ने वेदमंत्रो की व्याख्या की और यज्ञ उपासना के महत्व का प्रतिपादन किया जो अतुलनीय रहा। आर्य समाज के सदस्यों व अधिकारियों ने इसको सराहा। 15 यज्ञ वेदियों पर 31 यजमान दम्पतियों ने अंतिम दिन आहुति दी। श्रीआशु वर्मा नगर निगम गाजियाबाद के महापौर, भाजपा के मंडल अध्यक्ष श्री संजीव त्यागी, वरिष्ठ आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री श्रद्धानन्द शर्मा, श्री सत्यवीर चौधरी, बहन श्रीमती प्रतिभा सिंघल जी ने पूर्णाहुति के दिन अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की और कुछ महानुभावो ने वक्तव्य भी दिये। अगले जनपदीय आर्य महासम्मेलन की सूचना दी गई।

– वीरसिंह, उपप्रधान व संयोजक
आर्यसमाज नूर नगर सिन्हानी;
गाजियाबाद–201203 (उत्तर प्रदेश)

समाज में जागरूकता पैदा करने तथा समाज में वैचारिक क्रांति लाने हेतु

स्वामी अग्निवेश जी द्वारा लिखित पुस्तकें पढ़ें

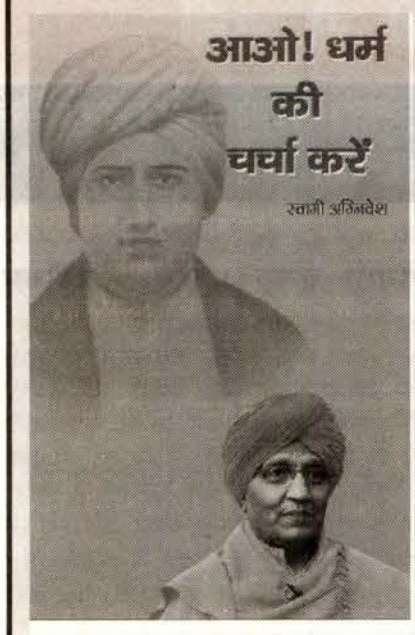

देश में जिस प्रकार से जाति और धर्म के नाम पर समाज में नफरत का जहर घोला जा रहा है, अंधविश्वास और अंधभक्ति समाज को भटका रही है। रूढ़िवादिता और कुरीतियों ने आज भी समाज को जकड़ा हुआ है। भारतीय संस्कृति को छोड़ लोग पश्चिमी संस्कृति को अपना रहे हैं। भ्रष्टाचार लोगों की नस–नस में घुस गया है। इससे समाज और देश के लिए बड़ा खतरा पैदा होता जा रहा है।

ऐसे में एक वैचारिक क्रांति की जरुरत है। मेरा मानना है कि यह क्रांति वैदिक समाजवाद से ही लाई जा सकती है। देश और समाज के उत्थान के लिए मैंने वैदिक समाजवाद पर

1. महर्षि दयानन्द और वैदिक समाजवाद 2. वैदिक समाजवाद और भ्रष्टाचार 3. वैदिक समाजवाद और कम्युनिज्म 4. वैदिक समाजवाद और जातिवाद 5. वैदिक समाजवाद और भाग्यवाद 6. आओ ! धर्म की चर्चा करें पर पुस्तिकायें लिखी हैं। (आजकल बड़ी पुस्तक कोई पढ़ता नहीं–इसलिए 12 या 16 या 20 पृष्ठ की पुस्तिका जिसे एक बार में पढ़ा जा सके और किसी दूसरे को भी आसानी से दिया जा सके तैयार की है)

ये पुस्तिकायें समाज में जागरूकता पैदा कर वैचारिक क्रांति लाने में बड़ी सहायक होंगी। युवाओं में देश और समाज के लिए काम करने का जज्बा भरेंगी। हर पहलू पर गौर करते हुए इन छह पुस्तिकाओं के सेट की कीमत 85 रुपये रखी गई है। जिस पर हम 75/– रुपये सहयोग राशि की अपेक्षा रखते हैं।

100 के सेट पर 40 फीसद का डिस्काउंट मिलेगा। अथार्त 8500 रु. के बदले केवल 5000/– रुपये की सहयोग राशि अपेक्षित होगी। स्कूल कालेज के विद्यार्थियों के लिए तो यह बहुत आकर्षक होगा। स्कूली विद्यार्थियों के लिए एक प्रति 10 रु. या 15 रु. देकर खरीदना आसान होगा। आप शीघ्र ही इसका आर्डर हमें भिजवायें। धन्यवाद

स्वामी अग्निवेश
agnivesh70@gmail.com
7 जंतर मंतर रोड नई दिल्ली 110001
दूरभाष 011–23367943, 23363221

भजनोपदेशिका गुरुकुल में प्रवेश

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्त की विशेषज्ञा भेजनोपदेशिका तैयार करना गुरुकुल का मुख्य उद्देश्य है। भजनोपदेशिका गुरुकुल में उन्हीं छात्राओं को प्रवेश दिया जायेगा, जो जीवन में वैदिक सिद्धान्त के अनुसार शिक्षा ग्रहण करना चाहती है तथा आर्य समाज का प्रचार करना चाहती है। गुरुकुल में हारमोनियम, ढोलक, चिमटा, तबला, वायलिन, बांसुरी आदि परम्परागत वाद्ययन्त्र सिखाने की सुन्दर व्यवस्था है। परम्परागत गुरुकुलीय शिक्षा, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, संगीत प्रशिक्षण तथा सिलाई का प्रशिक्षण सभी को अनिवार्य रूप से दिया जाता है। भजनोपदेशिका बनने की इच्छुक छात्रा प्रवेश के लिए निम्नलिखित नम्बरों पर शीघ्र सम्पर्क करें। स्थान सीमित है।

– प्रियंका भारती, मो.:– 9694892735, 8441087408

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना, नवापारा, उड़ीसा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर

एक निवेदन

मान्यवर!

पश्चिम ओडिशा के प्रमुख शिक्षा केन्द्र, महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष चल रहा है। पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली आर्यों का तीर्थ स्थल संस्कृति एवं संस्कार की रक्षा भूमि गुरुकुल आमसेना की स्थापना मार्च माह 1968 में स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने की थी। स्थापना का वह समय इस क्षेत्र के सुदिनों के आरम्भ का समय था। विकट परिस्थितियों में स्थापित यह संस्था इस क्षेत्र की ही नहीं अपितु पूर्वोत्तर भारत की सर्वाधिक प्रशंसित एवं समाजसेवा में अग्रणी संस्था है। हजारों ब्रह्मचारियों ने यहाँ शिक्षा प्राप्त कर देश और समाज की जो बहुमूल्य सेवा की उसका आंकलन हर्ष एवं आनन्द प्रदान करता है। भारतभर में फैले आर्य जगत के समस्त समाजोपयोगी कार्यों तथा नागालैण्ड से लेकर राजस्थान, हिमाचल प्रदेश तक फैली समस्त आर्य संस्थाओं में गुरुकुल के स्नातक समाज सेवा का अनूठा कार्य कर रहे हैं। स्वामी जी का व्यक्तित्व जितना महान होता गया संस्था के कार्य भी उसी प्रकार विस्तारित होते गये।

सत्वे सिद्धिः भवति महतां नौपकरणैः।

स्वल्प साधनों के साथ आरम्भ हुई संस्था आज सर्वसाधनों से सम्पन्न, योग्य आचार्यों, कार्यकर्ताओं, समाजसेवियों, उपदेशकों की कर्मभूमि है। संस्था के कार्यों का विस्तार इस प्रकार हुआ कि 18 अन्य सहयोगी संस्थाओं की स्थापना स्वामी जी महाराज के कर–कमलों द्वारा नागालैण्ड, आसाम, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा आदि प्रदेशों में हुई है।

समाजसेवा के प्रकल्पों में 100 बिस्तरों सहित आधुनिक चिकित्सालय, औषधालय, आयुर्वेदिक फार्मेसी, कृषि फार्म्स, बागवानी, साहित्य प्रकाशन विभाग, अन्न वितरण, वस्त्र वितरण, प्रचार विभाग, कन्या महाविद्यालय, आदिवासी क्षेत्रों में कन्या छात्रावास, गौसेवा केन्द्र, शुद्धि विभाग सहित आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन परम्परा के विद्यालयों की स्थापना प्रमुख हैं।

50 वर्षों के सिंहावलोकन के इस पुनीत अवसर पर आप संस्था के सहयोगीजनों को आमंत्रित करते हुए हमें हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। आपका आगमन इन कार्यों एवं ऋषि परम्परा के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा का द्योतक है। अभी से अपनी दैनन्दिनी में ये तिथियाँ लिख लीजिए। **23 दिसम्बर, 2017 से 25 दिसम्बर, 2017 तक आपका सादर निमंत्रण है।**

आइये! समस्त विश्व के आर्यबन्धु इस महान अवसर के साक्षी बन स्वर्ण जयन्ती उत्सव को सफल में अपना योगदान करें। आपके आगमन की प्रतीक्षा रहेगी। अपनी संस्था एवं इष्ट मित्रों सहित जरूर पधारियेगा। कुम्भ की शोभा बढ़ेगी, ऋषि परम्परा बढ़ेगी, ऋषि दयानन्द जी के स्वप्न साकार होंगे। स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली आपको स्नेह सहित निमंत्रण भेज रही है।

दर्शनाभिलाषी

माता परमेश्वरी देवी	स्वामी व्रतानन्दसरस्वती	रुद्रसेन सिन्धु	सुरेश अग्रवाल	डॉ. पूर्ण सिंह डबास	आचार्य वीरेन्द्र कुमार
प्रधाना	आचार्य	उपप्रधान	उपप्रधान	वरिष्ठ संरक्षक	मंत्री

गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड, जिला–नवापारा, उड़ीसा–766109, मो.:–09437070541/615, 7873111213

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

देव यज्ञशील से प्रेम करते हैं, आलसी से नहीं

**इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः।।**

—ऋ० ८/२/१८ ; अथर्व० २०/१८/३

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः, प्रियमेधश्चाङ्गिरसः।। देवता—इन्द्रः।। छन्दः—आर्षीगायत्री।।

विनय—आलस्य मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। हम जो नित्य पाप करते हैं उनमें से बहुतों का कारण मन की कुटिलता नहीं होता, किन्तु बहुत बार केवल हम आलस्य व सुस्ती के कारण पापी बनते हैं। एवं, बहुत–से अत्यन्त लाभकारी कार्यों को शुरू करके केवल आलस्य से हम उन्हें छोड़ देते हैं और आत्मकल्याण से वञ्चित हो जाते हैं। अतः आलस्य करने वाले लोग कभी परमात्मा के प्यारे नहीं हो सकते। या यूँ कहना चाहिए कि परमात्मा के देव आलसियों को नहीं चाहते, क्योंकि आलसी लोग देवों के चलाये इस संसार–यज्ञ में उनको सहयोग नहीं दे सकते। परमात्मा अपने इन देवों द्वारा जगत् में परिपूर्ण व्यवस्था रखते हैं– इन द्वारा पूरा नियमन, अनुशासन ;क्पेबपचसपदम) चला रहे हैं। भूल, गलती, अनुचितता, अपराध और पाप का ठीक नियमानुसार हमें दण्ड मिलता रहता है– बेचैनी, रोग, व्यथा, वेदना, क्लेश, मृत्यु आदि द्वारा हमें शिक्षा मिलती रहती है कि हम परमात्मा की आज्ञाओं का उल्लंघन न करें। ये देव इस अनुशासन को बिल्कुल अतन्द्र होकर भूल–चूक से बिल्कुल रहित होकर– कर रहे हैं। ये सृष्टि के देव उस सत्त्वगुण के बने हुए हैं जोकि तमः को जीतकर रजः को अपने वश में किये हुए हैं, अतः आलस्य–प्रमाद करने वाले तमोगुणी (तमोगुण से दबे हुए) मनुष्य देवों के प्यारे कैसे हो सकते हैं?अतः देव उन्हें प्रमादों के लिए बार–बार दण्ड दे–देकर, उन्हें पुनः–पुनः ठोकरें मारते हुए जगाते रहते हैं। परमात्मा के देव जो यह जगद्रूपी यज्ञ चला रहे हैं उसी के अनुसार–उसकी अनुकूलता में जो भी कुछ कर्म मनुष्य करता है वह सब यज्ञ–कर्म ही है। मनुष्य को इस यथार्थ कर्म के सिवाय और कोई कर्म नहीं करना चाहिए। वही कर्म शुभ है, पुण्य है, यज्ञिय है, जिस द्वारा इस संसार के कुछ अच्छे, ऊँचे और पवित्र बनने में सहायता व सहयोग मिलता है। इस प्रकार का कोई भी कर्म करना इस संसार–यज्ञ के लिए सोम–रस का सेवन करना है। तनिक देखो–इन देवों के प्यारे लोगों को देखो– जो अपने प्रत्येक कर्म द्वारा संसार–यज्ञ के संवर्द्धक, पोषक इस सोम–रस को पैदा करते हुए और अपने इस कर्त्तव्य में सदा जाग्रत्, कटिबद्ध संनद्ध रहते हुए देव–तुल्य जीवन बिता रहे हैं।

शब्दार्थ—देवाः=देव लोग सुन्वन्तम्=यज्ञकर्म करते हुए की इच्छन्ति=इच्छा करते हैं। न स्वप्नाय स्पृहयन्ति=निद्राशील, सुस्तों को नहीं चाहते। अतन्द्राः=स्वयं आलस्य–रहित ये देव–लोग प्रमादम्=गलती, भूल करने वाले का यन्ति=नियमन करते हैं।

साभार– 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्राचीन वैदिक संस्कृति को अपनाते हुए अंधविश्वास से बचें

– स्वामी आर्यवेश

खटकड़ (उचाना) :– आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी आज खटकड़ गाँव मे पहुंचे। आर्य युवक परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में स्वामी जी मुख्य अतिथि रहे। यज्ञ का आयोजन करके अंधविस्वास व पाखंड से दूर रहने का संकल्प स्वामी जी ने उपस्थित जनों से करवाया। स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्धबोधन में कहा कि आज कुछ लोगों ने धर्म के नाम को बदनाम करने का कार्य किया है। इसका मुख्य कारण वेद से विमुख होना है। जब से भारत के लोग वेद से दूर हुये तब से ही समाज मे धार्मिक पाखण्ड शुरू हुआ। स्वामी दयानंद ने लगभग 150 वर्ष पहले पाखण्ड को मिटाने के लिए सत्यार्थ प्रकाश की रचना की। उसको पढ़कर ही समाज सही दिशा में आगे बढ़ सकता है। स्वामी जी ने कहा कि आज पुनः प्राचीन वैदिक संस्कृति को अपनाने की जरूरत है।

आज यज्ञ में मास्टर अजीतपाल की सुपुत्री दीक्षा ने जन्मदिन के अवसर पर यज्ञ में आहुति डाली।

कार्यक्रम का संचालन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद जींद के उप प्रधान अशोक आर्य ने किया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान दीक्षेन्द्र आर्य ने कहा कि आज युवाओं को संस्कारित करने की आवश्यकता है। युवाओं के निर्माण के लिये आर्य समाज निरंतर युवा निर्माण अभियान चला रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र भक्त व मातृ पितृ भक्त युवाओं से ही देश तरक्की व उन्नति कर सकता है।

कार्यक्रम के उपरांत स्वामी आर्यवश जी का आर्य युवक परिषद खटकड़ की ओर से स्वागत किया गया।सूबेदार सेवा सिंह, राजबीर शास्त्री, शमशेर सिंह,डॉ जरनैल सिंह,अजीतपाल, दलबीर सिंह, चन्द्र सिंह,जगपाल सिंह, अशोक आर्य, कर्मपाल आर्य,सोनू आर्य आदि ने स्मृति चिन्ह भेंट किया। यज्ञ की व्यवस्था सोनू आर्य ने संभाली। — अशोक आर्य, 9467125438

खटकड़ में पहुंची बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष महिला सम्मेलन का हुआ आयोजन

खटकड़ (उचाना) : सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद खटकड़ द्वारा आज गाँव में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या मुख्य अतिथि रही तथा बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का संचालन मोनिका आर्या ने किया।

बहन पूनम आर्या ने अपने मुख्य उद्बोधन में कहा कि आज समाज में पाखण्ड व अंधविश्वास तेजी से फैलता जा रहा है जिस से सावधान व सतर्क रहने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि श्रद्धा रखो लेकिन अंधश्रद्धा मत रखो, विश्वास करो लेकिन अंधविस्वास मत करो। अपने विवेक व बुद्धि के साथ तर्क पर खरी उतरने वाली बातों को जीवन मे उतारो। बहन जी ने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए सावधान किया तथा आहावान किया कि आज के समाज मे पाखंडी बाबाओं की बाढ़ सी आई हुई है। आज महिलाएँ यदि अपने विवेक से फैसला लें व इन डेरों में जाना बंद कर दें तो ये डेरे अपने आप बंद हो जाएंगे। आजकल के ये बाबा महिलाओं को अपनी तरक्की की सीढ़ी बना कर प्रयोग कर रहे हैं।

समाज में महिलाओं को संस्कारित करने की अवश्यकता है क्योंकि संस्कारवान माँ ही बच्चों को संस्कारित कर सकती है।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने महिलाओं को पाखंड से दूर रहने का संकल्प दिलवाया।

इस अवसर पर बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, शशि आर्या, मोनिका आर्या,रीमा आर्या, इंदु आर्या को गावँ की ओर से स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर कृष्णा आर्या, बबली,पतासो, ओमपति, बिरमती, बिमला, कृष्णा,शांति देवी, सुद्धि, केला देवी, कविता देवी,सीना देवी, चन्द्रवती, तांतरा, पूनम, गुड्डी, रामकली, सुनीता व दर्शना आदि उपस्थित रही।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।